B.A. (Hons) Part III
Philosophy - Paper VI
Topic - समाजदर्शन और समाजशास्त्र के बीच संबंध

Dr. Sachidanand Prasad.
Dept. of Philosophy.
R.R.S. College, Motcama.

समाज दर्शन और समाजशास्त्र के बीच के बीच कुछ समानता एवं कुछ अन्तर है। समाजदर्शन और समाजशास्त्र इन दोनों की पृष्ठभूमि एक है क्योंकि इन दोनों का संबंध मानव समाज से है। समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है। यह सामाजिक तथ्यों का अध्ययन है। यह मानव जीवन के हर पहलू से संबंधित है। अतः समाजशास्त्र की कई शाखाएँ है। समाजदर्शन, दर्शन की एक शाखा है।

समाजदर्शन और समाजशास्त्र के दृष्टिकोण में अन्तर है क्योंकि जहाँ समाज दर्शन मूल्यात्मक है वहीं समाजशास्त्र तथ्यात्मक है। प्रत्येक शास्त्र में अनुभव के आधार पर तथ्यों को इकट्ठा कर उनका विश्लेषण किया जाता है। अतः समाजशास्त्र विश्लेषणात्मक और एक यथार्थ विज्ञान है। समाज दर्शन का विषय वस्तु

Page No.
Date / /

②

भी वही है जो समाजशास्त्र का है लेकिन दोनों के दृष्टिकोण में अंतर है। इसलिए समाजशास्त्र तथ्यात्मक है लेकिन समाज दर्शन समीक्षात्मक तथा मूल्यात्मक है।

समाजदर्शन और समाजशास्त्र इन दोनों की प्रणाली में अन्तर है क्योंकि समाज दर्शन की प्रणाली दार्शनिक है लेकिन समाजशास्त्र की प्रणाली वैज्ञानिक है। अतः एक यथार्थ विज्ञान है तो दूसरा समीक्षात्मक तथा आदर्शनिर्देशक। समाजशास्त्र में तथ्यों का निरीक्षण किया जाता है लेकिन समाज दर्शन में सामाजिक सिद्धांतों का समन्वय किया जाता है। अतः एक विश्लेषणात्मक है तो दूसरा संश्लेषणात्मक है। प्रत्येक विज्ञान की तरह समाजशास्त्र की भी आवश्यक मान्यताएँ होती हैं। समाज दर्शन समाजशास्त्र की अवधारणाओं तथा उनकी आवश्यक मान्यताओं की समीक्षा करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि समाज दर्शन और समाजशास्त्र दोनों एक दूसरे के पूरक हैं क्योंकि एक का संबंध तथ्य से तो दूसरे का संबंध आदर्श से है। तथ्य और आदर्श दोनों आवश्यक और एक दूसरे के पूरक हैं। बिना आदर्श के तथ्य का कोई मूल्य नहीं होता और बिना तथ्य के आदर्श कोरी कल्पना है।